



SHRI ADBUL JABBAR KHAN (POSTHUMOUS)

Shri Abdul Jabbar Khan was a social worker from Bhopal, Madhya Pradesh, known for his fight for justice for victims of Bhopal Gas tragedy.

2. Born on 1st June , 1957, Shri Jabbar's father, Shri Abdul Sattar, and mother, Smt. Hamida Bi, were both workers at the cotton mill in Rajendra Nagar, Bhopal. Prior to the Bhopal disaster, 27-year old Shri Abdul Jabbar, had been working as a Polytechnic Engineer after having earned his Diploma at an Industrial Training Institute in Bhopal. On the night of 02-03 Dec, 1984, when the poisonous gas disaster struck Bhopal, he and his family were exposed to the toxic gases because they were residing in one of the 36 gas-affected municipal wards of Bhopal. His parents and elder brother were among those who later succumbed to the gas-afflicted injuries: his father died in 1987; elder brother in 1999 and his mother in 2002.

3. The disaster brought about a profound change in Shri Jabbar's life. As a victim of the disaster and as a witness to the adverse impact that the disaster had unleashed on the entire community around him, he joined scores of social workers who had come forward to organize relief for the gas-victims. Subsequently, he became part of the Zahreli Gas Khand Sangharsh Morcha, (ZGKSM), an organization that was formed in 1985 to seek justice for the Bhopal gas victims. In 1986, he lent his support to some 2000-odd women, who were carrying on an agitation demanding the reopening of several stitching centres, which had been set-up to provide gainful employment to gas-affected women but were abruptly closed down after the first anniversary of the disaster. In the process, these women gas-victims founded the Bhopal Gas Peedith Mahila Udyog Sanghathan (BGPMUS) and soon elected him as the Convener of BGPMUS. Through sustained agitation, BGPMUS succeeded in reopening the stitching centres in 1987. Thereafter, BGPMUS decided to champion the cause of all gas victims since the problems faced by the gas victims were huge and had remained unresolved.

4. It was under Shri Jabbar's leadership that thousands of members of BGPMUS had voiced their protest against the unjust settlement, for better medical facilities, for fair compensation, and for justice before the Madhya Pradesh Vidhan Sabha, the Supreme Court of India and before the Parliament on numerous occasions from 1989 onward.

5. Shri Jabbar not only championed the cause of the gas-victims but also was an ardent votary of all social causes. He was also committed to protecting the environment. He worked a lot to safeguard the lakes, parks and historical monuments in Bhopal. The last 35 years of his life was spent in promoting all kinds of social causes. Unfortunately, his health began to deteriorate especially from 2010 onward. The gas relief hospitals in Bhopal were ill-equipped to provide him the necessary treatment. His long struggle to improve health facilities for gas-victims could not ultimately save him from avoidable death.

6. In recognition of his selfless social service to society, the Government of Madhya Pradesh in December, 2019 posthumously awarded Shri Jabbar, the prestigious Indira Gandhi Award for Social Service.

7. Shri Jabbar passed away on 14th November, 2019.





श्री अब्दुल जब्बार ख़ान (मरणोपरांत)

श्री अब्दुल जब्बार ख़ान भोपाल, मध्य प्रदेश के एक सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्हें भोपाल गैस त्रासदी के पीड़ितों को न्याय दिलाने में उनके संघर्ष के लिए जाना जाता है।

2. 1 जून, 1957 को जन्मे, श्री जब्बार के पिता, श्री अब्दुल सत्तार, और माँ श्रीमती हमीदा बी, दोनों भोपाल के राजेंद्र नगर में कॉटन मिल में काम करते थे। भोपाल आपदा से पहले, 27 वर्षीय श्री जब्बार, भोपाल के एक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद पॉलिटेक्निक इंजीनियर के रूप में काम कर रहे थे। 02–03 दिसंबर, 1984 की रात को, जब भोपाल में जहरीली गैस हादसा हुआ, तो भोपाल के 36 गैस प्रभावित नगरपालिका वार्डों में से एक बार्ड में रहने वाले श्री जब्बार और उनका परिवार जहरीली गैस की चपेट में आ गया। उनके माता–पिता और बड़े भाई उन लोगों में से थे, जिन्होंने बाद में जहरीली गैस के कारण दम तोड़ दिया। उनके पिता की मृत्यु 1987 में, बड़े भाई की मृत्यु 1999 में और मां की मृत्यु 2002 में हो गई।

3. इस आपदा से श्री जब्बार के जीवन में गहरा बदलाव आया। आपदा के पीड़ित के रूप में और अपने आसपास के पूरे समुदाय पर उसके बुरे प्रभाव के प्रत्यक्षदर्शी के रूप में, वह उन बहुत सारे सामाजिक कार्यकर्ताओं से जुड़ गए जो गैस पीड़ितों को राहत पहुंचाने में आगे थे। इसके बाद, वह 1985 में भोपाल गैस पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए बने एक संगठन 'जहरीली गैस काण्ड संघर्ष मोर्चा' में शामिल हो गए। 1986 में, उन्होंने ने कई सिलाई केंद्रों को फिर से खोलने की मांग को लेकर आंदोलन कर रही लगभग 2000 महिलाओं को अपना समर्थन दिया, जिन्हें गैस पीड़ित महिलाओं को लाभकारी रोजगार प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया था। इन सिलाई केंद्रों को आपदा की पहली सालगिरह पर अचानक बंद कर दिया गया था। उसी दौरान, इन महिला गैस पीड़ितों ने भोपाल गैस पीड़ित महिला उद्योग संगठन की स्थापना की और जल्द ही श्री जब्बार को उसके संयोजक के रूप में चुन लिया गया। अनवरत आंदोलन के बाद, भोपाल गैस पीड़ित महिला उद्योग संगठन वर्ष 1987 में, सिलाई केंद्रों को फिर से खोलने में कामयाब हुआ। इसके बाद, इस संगठन ने सभी गैस पीड़ितों की पैरवी करने का फैसला किया क्योंकि गैस पीड़ितों ने भयानक समस्याओं का सामना किया था और ये समस्याएं अनसुलझी थी।

4. श्री जब्बार के नेतृत्व में भोपाल गैस पीड़ित महिला उद्योग संगठन के हजारों सदस्यों ने 1989 के बाद से कई बार, अन्यायपूर्ण पुनर्वास के विरुद्ध तथा बेहतर चिकित्सा सुविधाओं, उचित मुआवजे को लेकर मध्य प्रदेश विधानसभा, भारत के उच्चतम न्यायालय और संसद के समक्ष अपना विरोध जताया था।

5. श्री जब्बार न केवल गैस–पीड़ितों के हित के लिए लड़े बल्कि सभी सामाजिक आंदोलनों के भी उत्साही समर्थक रहे। वह पर्यावरण की रक्षा के लिए भी प्रतिबद्ध थे। उन्होंने भोपाल की झीलों, पार्कों और ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण के लिए बहुत काम किया। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 35 वर्ष सभी प्रकार के सामाजिक हितों को बढ़ावा के कार्य के लिए समर्पित कर दिया। दुर्भाग्य से, उनका स्वास्थ्य विशेष रूप से 2010 के बाद से बिगड़ना शुरू हो गया। भोपाल के गैस राहत वाले अस्पतालों में सुविधाओं की घोर कमियां थी जिससे उन्हें जरूरी इलाज नहीं मिल पाया। गैस पीड़ितों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के लिए उनका लंबा संघर्ष आखिरकार उन्हें अकाल मृत्यु से नहीं बचा सका।

6. समाज के प्रति उनकी निःस्वार्थ सामाजिक सेवा के सम्माकन में, मध्य प्रदेश सरकार ने दिसंबर 2019 में मरणोपरांत श्री जब्बार को प्रतिष्ठित इंदिरा गांधी समाज सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया।

7. श्री जब्बार का 14 नवंबर, 2019 को देहावसान हो गया।